दैनिक
CIN-No-UT4999RJ2020PTC0679
UN NO-200022186
राजस्थान,दिल्ली,छत्तीसगढ़ से एकसाथ प्रकाशित
RNI NO. RAJHIN/2023/89729

मरुधर विशेष

Marudharvishesh@gmail.com
मो. 9653906665

अंक 02/91 | जयपुर | 20 अप्रैल /2025 | शनिवार | मूल्य रु 5 | पृष्ठ: 04

शिक्षा विभाग की लापरवाही का नतीजा, सरकारी विद्यालय की तीन छात्राओं पर पड़ा भारी, अलवर चल रहा है इलाज

कमरे की छत की पट्टी टूटने सें छात्राओं के हाथ व पैर फैक्चर और चेहरे पर आई गंभीर चोट

खैरथल - तिजारा जिले में शिक्षा विभाग की नाक के नीचे चल रहे है जर्जर हालत में कई सरकारी विद्यालय, जिले के जिम्मेदार अफसरों को जानकारी फिर भी नहीं है इस ओर ध्यान, बड़ा हादसा होने का कर रहे इंतजार

मरुधर विशेष

मोहम्मद शकील/विजय सिंह खैरथल । शिक्षा को बढ़ावा देने और सरकारी विद्यालयों में बच्चों को अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है लेकिन शिक्षा विभाग के लापरवाह अधिकारियों की वजह से सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को आज आधुनिक युग में भी पाषाण युग जैसे जर्जर कमरों में बैठा कर पढ़ाया जा रहा है, ऐसे में बच्चों का जीवन संकट में है। ऐसा ही मामला खैरथल- तिजारा जिला मुख्यालय खैरथल से करीब 9 किलोमीटर दूर समीपवर्ती गांव हरसौली में संचालित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरसौली में सामने आया है। हरसौली में संचालित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को करीब ग्यारह बजे एक कमरे की छत की पट्टी टूट कर तीन मासूम बालिकाओं पर गिर जाने से तीनों मासूम बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई और दर्द से कहराती हुई अपने माता- पिता को आवाज लगने लगी- हमें बचा लो। हादसे में गंभीर रूप से घायल हुई कक्षा तीन में पढ़ने वाली दो छात्राओं और कक्षा चार की एक छात्रा शामिल हैं। शिक्षा विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों और स्कूल प्रशासन की घोर लापरवाही के कारण हुए हादसे के बाद बालिकाओं की चीख सुनकर स्कूल में हड़कंप मच गया और स्कूल में मौजूद अध्यापको ने बालिकाओं को हरसौली के राजकीय अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने दोनों बालिकाओं को गंभीर अवस्था में अलवर रैफर कर दिया ओर एक बालिका को खैरथल के राजकीय सेटेलाइट अस्पताल में रेफर कर दिया। सैटेलाइट अस्पताल खैरथल में एक बालिका का उपचार करने के बाद चिकित्सकों ने उसे भी सीटी स्कैन जांच के लिए अलवर रैफर कर दिया। इस दौरान राजकीय सैटेलाइट अस्पताल खैरथल में मौजूद विद्यालय के शिक्षकों ने बताया कि कुछ दिन पहले गांव के ही भामाशाह रामचरण मोदी के द्वारा कुछ दिन पहले ही कमरे की छत डलवाई गई थी और के कारण बाकी बच्चे कमरे से बाहर चले गए थे और तीनों बालिकाएं कमरे के अंदर ही मौजूद थी। ग्रामीणों ने बताया कि इसमें स्कूल शिक्षको की घोर लापरवाही सामने आई है। ग्रामीणों ने बताया कि जिस कमरे की भामाशाह के द्वारा छत डलवाई गई है वह कमरा कई साल पुराना है और पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था लेकिन स्कूल प्रशासन और भामाशाह ने मिलकर इस पुराने कमरे की छत के ऊपर दूसरी छत डलवा दी जिसकी वजह से यह हादसा हुआ है। इसके जिम्मेदार भामाशाह और स्कूल प्रशासन है जिसकी जांच कर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है।

इस संदर्भ में खैरथल - तिजारा जिला शिक्षा अधिकारी शकुंतला मीणा से दुरभाष पर विद्यालय में हुए हादसे के संबध में जानकारी लेनी चाही तो जिला शिक्षा अधिकारी के फोन की घंटी बजती रही लेकिन उनके द्वारा फोन उठना भी मुनासिब नहीं समझा।

इस संदर्भ में डॉ. संतोष कुमार प्रिंसिपल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरसौली से दुरभाष पर हादसे के संबध में जानकारी लेनी चाही तो प्रिंसिपल के फोन की घंटी बजती रही लेकिन उनके द्वारा भी फोन उठना उचित नहीं समझा।

शिक्षकों और स्थानीय ग्रामीणों से किए सवाल तो सच आया सामने

शिक्षकों से दैनिक मरुधर विशेष के पत्रकारों ने सवाल किया जिस कमरे की छत की पट्टी टूट कर गिरी है क्या उस कमरे में उनके द्वारा क्लास लगाई जा रही थी.. जिस पर शिक्षकों ने कहा कि इस कमरे में क्लास नहीं चल रही थी, लेकिन वही ग्रामीणों का कहना है कि जिस कमरे में यह हादसा हुआ है उस कमरे में अध्यापकों के द्वारा क्लास लगाई जा रही थी और बच्चे अध्ययन कर रहे थे इस दौरान कक्षा एक से चार तक के बच्चे इसी कमरे में बैठे हुए थे लेकिन लंच होने के कारण बाकी बच्चे कमरे से बाहर चले गए थे और तीनों बालिकाएं कमरे के अंदर ही मौजूद थी। ग्रामीणों ने बताया कि इसमें स्कूल शिक्षको की घोर लापरवाही सामने आई है।

शिक्षा विभाग पर उठ रहे सवाल

हादसे के बाद से ही स्थानीय ग्रामीणों और अभिभावकों में भारी आक्रोश है। लोगों का कहना है कि स्कूल भवन की स्थिति लंबे समय से जर्जर है जिसकी जानकारी शिक्षा विभाग सहित जिम्मेदार शिक्षको को भी है लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। यह हादसा अध्यापकों की लापरवाही और शिक्षा विभाग की अनदेखी का नतीजा है।

अभिभावकों ने कहा मामले की हो जांच

हादसे के बाद अभिभावकों ने शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से दोषियों के खिलाफ जांच कर कार्रवाई की मांग की है। साथ ही स्कूल भवन की तत्काल मरम्मत और छात्रों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने की भी मांग की है। उन्होंने कहा कि जिला मुख्यालय खैरथल पर बैठे शिक्षा विभाग के अधिकारी केवल गुलदस्ता लेकर सम्मान स्वागत कराने में ही व्यस्त रहते हैं। इनको सरकार और बच्चों के भविष्य से कोई सरोकार नहीं है।

शनिवार को करीब ग्यारह बजे लंच के दौरान तीनों बालिकाएं खेलते हुए कमरे के अंदर चली गई तभी अचानक छत की पट्टी टूट कर बालिकाओं के ऊपर गिर गई जिससे तीनों बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई। बालिकाओं के हाथ,पैर फैक्चर और चेहरे पर गहरी चोटे आई है। वहीं शिक्षकों से पूछा गया कि जिस कमरे की छत की पट्टी टूट कर गिरी है क्या उस कमरे में उनके द्वारा क्लास लगाई जा रही थी,जिस पर शिक्षकों ने कहा कि इस कमरे में क्लास नहीं चल रही थी..? लेकिन वही ग्रामीणों का कहना है कि जिस कमरे में यह हादसा हुआ है उस कमरे में अध्यापकों के द्वारा क्लास लगाई जा रही थी और बच्चे अध्ययन कर रहे थे इस दौरान कक्षा एक से चार तक के बच्चे इसी कमरे में बैठे हुए थे लेकिन लंच होने

कांग्रेस की राजनीति में अब सचिन पायलट है अशोक गहलोत की भूमिका में

राष्ट्रीय राजनीति में गहलोत का कोई महत्व नहीं, गहलोत की बगावत का हो रहा आंकलन

जयपुर। सोनिया गांधी और राहुल गांधी के विरुद्ध नेशनल हेराल्ड प्रकरण में जब ईडी ने दिल्ली की स्पेशल कोर्ट में चार्जशीट पेश की तो 17 अप्रैल को कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने देशभर में प्रदर्शन किया। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जयपुर में हुए प्रदर्शन में शामिल हुए जबकि पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट दिल्ली के प्रदर्शन में शरीक रहे। पायलट ने दिल्ली में कांग्रेस मुख्यालय में बैठ कर देश भर में हो रहे प्रदर्शन की निगरानी का काम भी किया। अशोक गहलोत के पचास वर्षों के राजनीतिक जीवन में यह पहला अवसर है, जब कांग्रेस की राष्ट्रीय राजनीति में उन्हें महत्व नहीं मिल रहा है। इसके विपरीत उनके प्रतिद्वंदी माने जाने वाले सचिन पायलट को राष्ट्रीय राजनीति में लगातार महत्व मिल रहा है। 1998 में

पहली बार राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने से पहले अशोक गहलोत केंद्र सरकार में मंत्री रहे। गहलोत तीन बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। यह बात अलग है कि गहलोत के मुख्यमंत्री रहते हुए ही राजस्थान में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा। लेकिन मुख्यमंत्री के पद से हटने के बाद गहलोत तुरंत कांग्रेस की राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय होते रहे। महामंत्री का पद हासिल करने के बाद कई प्रदेशों का प्रभार गहलोत के पास रहा, लेकिन यह पहला अवसर है, जब मुख्यमंत्री के पद से हटने के बाद गहलोत को न तो राष्ट्रीय महामंत्री का पद मिला है और न ही किसी प्रदेश के प्रभारी का जिम्मा। गहलोत गत वर्ष दिसंबर में ही मुख्यमंत्री के पद से हट गए थे। 15 माह गुजर जाने के बाद भी गहलोत को कांग्रेस में कोई महत्वपूर्ण पद नहीं मिला है। वर्ष 2022 में जब नेशनल हेराल्ड के प्रकरण में सोनिया गांधी और राहुल गांधी से दिल्ली में पूछताछ हुई थी, तो कांग्रेस के राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व गहलोत ने ही किया था। तब जयपुर में मुख्यमंत्री का कामकाज छोड़कर गहलोत दिल्ली चले गए थे। लेकिन अब जब चार्जशीट पेश हुई है तो कांग्रेस के आंदोलन में गहलोत की कोई भूमिका देखने को नहीं मिली है। इसके विपरीत सचिन पायलट कांग्रेस की राजनीति में गहलोत की भूमिका में नजर आ रहे हैं।

पायलट बन सकते हैं अध्यक्ष

कांग्रेस के शीर्ष नेता राहुल गांधी ने हाल ही में राजसिान के पर्यटन स्थल रणथंभौर में दो दिन प्रवास किया। इस दौरान राहुल गांधी ने एक युवक से राजस्थान के कांग्रेस अध्यक्ष के बारे में राय ली। इस युवक ने कहा कि सचिन पायलट को कांग्रेस का प्रदेश अध्यक्ष बनाया जाना चाहिए। हालांकि मौजूदा समय में गोविंद सिंह डोटासरा प्रदेशाध्यक्ष हैं। लेकिन राहुल गांधी का प्रदेश अध्यक्ष के बारे में राय लेना बताता है कि आगामी विधानसभा चुनाव से पहले राजस्थान में प्रदेश अध्यक्ष बदला जाएगा। युवक ने जिस तरह राहुल गांधी के समक्ष पायलट का नाम लिया, उससे पायलट के समर्थक उत्साहित है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में जब विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को बहुमत मिला तब सचिन पायलट ही प्रदेश अध्यक्ष थे।

भरतपुर के पूर्व राजपरिवार और मिशनरी स्कूल में विवाद

लक्ष्यराज बोले- हमारी जमीन पर दबाई, फादर ने चैलेंज दिया- दीवार गिराकर बताओ

भरतपुर। भरतपुर के पूर्व राजपरिवार और मिशनरी स्कूल प्रबंधन के बीच जमीन को लेकर विवाद हो गया। पूर्व राजपरिवार के सदस्य कुंवर लक्ष्यराज ने मिशनरी स्कूल प्रबंधन पर 3 बीघा जमीन दबाने का आरोप लगाया है। कहा- स्कूल के फादर ने चैलेंज किया कि दीवार गिराकर दिखाओ। दीवार गिराई तो पुलिस बुला ली। पुलिस ने 6 घंटे थाने में बैठाए रखा और बिना वारंट घर की तलाशी ली। कुंवर लक्ष्यराज महाराजा सूरजमल की 14वीं पीढ़ी हैं। दरअसल, भरतपुर के पूर्व राजपरिवार सदस्य के घर और सेंट पीटर्स स्कूल के बीच 3 बीघा जमीन का विवाद चल रहा है। यह जमीन पुलिस लाइन के ठीक सामने है। शुक्रवार को पूर्व राजपरिवार ने निर्माण के लिए दीवार तोड़ दी थी। इसके बाद विवाद बढ़ गया।

चैलेंज दिया तो दीवार तुड़वा दी

पूर्व राजपरिवार की सदस्य भावना सिंह ने बताया- हमारी दीवार में एक गेट था, जिसे कल हम रिपेयर करवा रहे थे। दो मजदूर काम कर रहे थे। फादर ने कहा- यह हमारी दीवार है। उन्होंने धमकी दी- मैं तुम सभी को जेल करवा दूंगा। उन्होंने मुझे चैलेंज दिया तो मैंने तुरंत बुलडोजर बुलाया और दीवार को तुड़वाना शुरू कर दिया। 15 फीट दीवार तोड़ दी।

कुंवर लक्ष्यराज बोले- स्कूल के फादर ने दादागिरी की

पूर्व राजपरिवार के सदस्य कुंवर लक्ष्यराज सिनसिनवार ने बताया- 13 दिसंबर 2024 को तहसीलदार और पटवारी ने जमीन के हिस्से पर निशान लगाए थे। शुक्रवार सुबह 10 बजे हम अपनी तरफ की दीवार पर निर्माण करवा रहे थे। इस दौरान 10.30 बजे के करीब स्कूल के फादर शिजू पल्लिप्पदन हमारे घर आए। उनके साथ 10-12 लोगों का स्कूल स्टाफ भी था। घर आकर वे लोग दादागिरी करने लगे। इसके बाद फादर ने मथुरा गेट थाना पुलिस को बुला लिया। पुलिस ने दोनों पक्षों को शिकायत लेकर थाने आने को कहा।

नाम परिवर्तन

मेरा नाम प्रिंसी यादव d/o योगेंद्र सिंह निवासी कसोन निज़ाम पुर एटा है किन्तु आधार कार्ड संख्या 372021994768 मे मेरा नाम आयुषी अंकित है जो कि गलत एवं हाईस्कूल की अंकतालिका के अनुसार 15/05/2007 है जो कि सही जावकि आधार कार्ड मे लिखी जन्मतिथि भी गलत है मेरे आधारकार्ड मे संशोदित कर मेरा नाम प्रिंसी यादव जन्मतिथि 15/05/2007 किया जाना न्याय संगत सही हैं।

राजस्थान की एम्बुलेंस में ऑक्सीजन सिलेंडर ही नहीं

कूलिंग सिस्टम काम नहीं कर रहे, स्टाफ नहीं; सर्वे की रिपोर्ट के मुताबिक 10 फीसदी एम्बुलेंस में खामियां

जयपुर।

राजस्थान में संचालित सरकारी एम्बुलेंस 108, 104 के हालात खराब हैं। पिछले दिनों नेशनल हेल्थ मिशन (एनएचएम) की ओर से करवाए सर्वे में ये रिपोर्ट सामने आई है। सर्वे की रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश में 10 फीसदी एम्बुलेंस ऐसी हैं, जिनमें कुछ न कुछ खामियां है। सर्वे में सामने आया कि कई एम्बुलेंस में गर्मी से बचाव के लिए कूलिंग सिस्टम तो लगे हैं, लेकिन वह काम ही नहीं कर रहे। कुछ एम्बुलेंस मरीज को प्राथमिक उपचार देने वाले इमरजेंसी मेडिकल टैक्निशयन (ईएमटी) ही नहीं है।

इसे देखते हुए एनएचएम की ओर से एम्बुलेंस सेवा प्रदाता कंपनियों को कारण बताओ नोटिस जारी करके जवाब मांगा है। एनएचएम निदेशक भारती दीक्षित की ओर से एम्बुलेंस सर्विस देने वाली कंपनी मॉडर्न इमरजेंसी सर्विस प्रा.लि. और ईएमआरआई ग्रीन हेल्थ सर्विसेज को यह नोटिस जारी किया है।

100 से ज्यादा एम्बुलेंस में मिली खामियां

रिपोर्ट के मुताबिक ये सर्वे इसी माह 3 से 9 अप्रैल के बीच करवाया गया। इस सर्वे में सामने आया कि 100 से ज्यादा एम्बुलेंस (108 और 104 एम्बुलेंस) जो एनएचएम के अंतर्गत संचालित होती है। उनमें कुछ न कुछ खामियां मिली। इसमें 8 एम्बुलेंस ऐसी मिली, जिनके टायरों की स्थिति खराब थी। उनमें स्टेपनी तक नहीं मिली। इसी तरह 6 एम्बुलेंस ऐसी थी, जिनमें जरूरी दवाइयां और मेडिकल उपकरण नहीं थे। सर्वे की रिपोर्ट के मुताबिक 108 सेवा के तहत लगी 28 एम्बुलेंस ऐसी मिलीं, जिनमें एयर कंडीशन तो लगा था, लेकिन वह काम ही नहीं कर रहा था। 2 एम्बुलेंस में तो मरीज को प्राथमिक उपचार देने वाला स्टाफ ईएमटी ही नहीं था। एक एम्बुलेंस में मरीज को दी जाने वाली ऑक्सीजन का सिलेंडर तक मौजूद नहीं था।

960 एम्बुलेंस का हो रहा है संचालन

सूत्रों के मुताबिक एनएचएम की तरफ से पूरे प्रदेश में 960 (108 एम्बुलेंस) एम्बुलेंस का संचालन करवाया जा रहा है। इनमें से 88 एम्बुलेंस में खामियां पाई गई हैं। इसके अलावा जननी सुरक्षा योजना के तहत संचालित 583 एम्बुलेंस (104 एम्बुलेंस) में से 14 में खामियां मिली है। आपको बता दें कि प्रदेश में संचालित सभी 108 एम्बुलेंस में से 30 फीसदी एडवांस लाइफ सपोर्ट वाली एम्बुलेंस होती है।

बच्चों में मोटापा काफी तेजी से बढ़ रही है। पहले भले ही ऐसे बच्चों को गोलू-मोलू कहकर पसंद किया जाता हो, लेकिन अब ऐसा नहीं है। बच्चों में मोटापे की समस्या और उससे सेहत को होने वाले नुकसानों के बारे में व्यापक चर्चा की जाती है। बच्चों में मोटापा कई कारणों से हो सकता है। इनमें अनुवांशिक कारणों को तो हम नियंत्रित नहीं कर सकते हैं, लेकिन कुछ कारण ऐसे हैं, जिन पर यदि नजर रखी जाए, तो हम समय रहते बच्चों को मोटापे से बचा सकते हैं।

बच्चे को मोटा बना सकती हैं ये आदतें

शारीरिक गतिविधियों का अभाव

उछलकूद करना बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। इससे न केवल उनका मानसिक विकास होता है, बल्कि इससे उनका शरीर भी स्वस्थ रहता है। इसके साथ ही बच्चों को छोटी-मोटी शारीरिक गतिविधियों में शामिल करें। रसोई तक अपने बर्तन खुद रख कर आना। लाइट का स्विच ऑफ करने उठना। पानी पीने जाना, घर की सीढ़ियां चढ़ना, जैसे काम भी आजकल बच्चे नहीं करते। इससे उनमें आलस्य आ जाता है और शरीर पर बेकार की चर्बी जमा होने लगती है। इसके साथ ही आपको चाहिए कि आप अपने बच्चे के साथ घूमने जाएं, उन्हें आउटडोर गेम्स में शामिल करें। वरना आजकल के बच्चों के लिए गेम्स का अर्थ कंप्यूटर अथवा ऑनलाइन गेम्स हो गया है।

लिक्विड कैलोरी का अधिक सेवन

शुगर ड्रिंक और फ्रुट ड्रिंक बच्चों के पसंदीदा पेय पदार्थ हैं, लेकिन इससे बच्चों को और कुछ नहीं बस चीनी और कैलोरी ही मिलती है। आपको चाहिए कि बच्चों को ऐसे पेय पदार्थों के सेवन से रोकें क्योंकि इनसे उन्हें पोषण नहीं मिलता, बल्कि उनकी सेहत को नुकसान ही पहुंचता है।

पर्याप्त नींद न लेना

देर रात तक जागते रहना आजकल की जीवनशैली का हिस्सा बन गया है। लेकिन, आपके बच्चों के लिए यह बिल्कुल ही फायदेमंद नहीं है। मोटापे और नींद के बीच गहरा संबंध है। शोध इस बात को

प्रमाणित कर चुके हैं कि जो बच्चे पूरी नींद नहीं लेते, उनके मोटापे से ग्रस्त होने की आशंका बहुत अधिक होती है। इसके साथ ही ज्यादा नींद भी आपके बच्चों के लिए अच्छी नहीं। इससे आपका बच्चा आलसी हो सकता है। ध्यान रहे आपके बच्चे के लिए नौ से दस घंटे की नींद काफी है।

जंक फूड का सेवन

बच्चों में मोटापे का अहम कारण जंक फूड का सेवन है। जरा सी भूख लगने पर ही बच्चे बर्गर, पिज्जा या कोई अन्य जंक फूड खा लेते हैं। ये हाई कैलारी खाद्य पदार्थ बच्चों की सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं। ऐसे में अभिभावकों का उत्तरदायित्व बनता है कि वे अपने बच्चों के खानपान का ध्यान रखें। बच्चों की जिद के चक्कर में आप उनकी सेहत के साथ खिलवाड़ न करें। कभी-कभार इस प्रकार का भोजन ठीक है, लेकिन इसका नियमित सेवन सेहत के नुकसानदेह है।

टीवी है बीमारी

एक वैज्ञानिक शोध में यह बात सामने आई थी कि जो बच्चे टीवी के सामने अधिक समय बिताते हैं, वे सामान्य बच्चों से अधिक मोटे होते हैं। टीवी मनोरंजन तक तो ठीक है, लेकिन इसके सामने अधिक समय तक बैठे रहना बच्चों को मोटा और थुलथुला बना सकता है। लास एंजेलिस स्थित पेनिंगटन बायोमेडिकल रिसर्च सेंटर के वैज्ञानिकों ने शयनकक्ष में टीवी देखने एवं बचपन में मोटापे के बीच सम्बधों को सामने रखा।

भोजन अगर न हो सही

बच्चे के आहार में फाइबर युक्त पदार्थों को शामिल करें। इससे उन्हें ऊर्जा भी मिलेगी और साथ ही उनका पेट भी लंबे समय तक भरा रहेगा। राजमा, ब्रोकली, मटर, नाशपति, साबुत अनाज का पास्ता, ओटमील आदि फाइबर के उच्च स्रोत हैं। इसके साथ ही आप उन्हें फल और सब्जियों का सेवन भी करवाएं। इनके अभाव से भी बच्चे में मोटापा बढ़ सकता है।

इस कारण से बदलता है तिल और मस्से का आकार

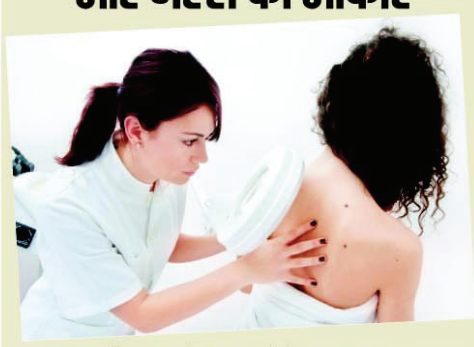

ड्राय स्किन हो, ऑयली स्किन, सेंसेटिव स्किन या नार्मल स्किन हो। त्वचा के रंग या त्वचा पर पाए जाने वाले तिल का आकार या रंग बदलने लगे तो यह स्किन कैंसर के लक्षण हैं। अगर आपके शरीर पर मौजूद तिल अथवा मस्सों का आकार बदल रहा है, तो लापरवाही भारी पड़ सकती है। ऐसे में तुरंत डॉक्टर से परामर्श करें, क्योंकि यह मेलानोमा कैंसर भी हो सकता है। मेलानोमा एक किस्म का स्किन कैंसर होता है। त्वचा के रंग का निर्माण करने वाले मेलेनोसाइट्स में यह रोग होता है।

क्या हैं कारण

इस रोग का पहला कारण है सूरज की तेज किरणें। ज्यादा देर तक सूरज की रोशनी में रहने पर त्वचा की कोशिकाओं को नुकसान होता है। इसके अलावा संक्रमण से भी यह रोग फैलता है। अगर घर में किसी एक को हो जाए, तो दूसरे में भी यह रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। त्वचा के अन्य कैंसर के मुकाबले यह ज्यादा गंभीर होता है। धीरे-धीरे यह कैंसर शरीर के अन्य अंगो को प्रभावित करने लगता है। यहां तक कि इस रोग के चलते हड्डियों को भी नुकसान पहुंचना शुरू हो जाता है।

लक्षण कहते हैं

तिल और मस्सों से इस रोग की शुरुआत होती है। सबसे पहले इनके आकार में बदलाव होना शुरू हो जाता है। इसके अलावा त्वचा पर अलग-अलग आकार के दाग-धब्बे बनने लगते हैं। जैसे-जैसे ये दाग पुराने होते हैं, उनमें खुजली होने लगती है। अगर तुरंत इसका इलाज नहीं कराया गया, तो दाग के चारों तरफ काले निशान बनने लगते हैं। खुजलाने पर खून निकलने लगता है। धीरे-धीरे दाग पूरी त्वचा पर फैलने लगते हैं। इनका रंग भी त्वचा के रंग से गहरा या काला होता जाता है। कई बार ये दाग-धब्बे सफेद, गुलाबी, लाल और नीले रंग के भी होते हैं।

क्या है उपचार

इस बीमारी से बचना है, तो ज्यादा देर धूप में न रहें। जरूरत पड़ने पर जाना पड़े, तो सनस्क्रीन लोशन लगाकर और शरीर को ठीक से ढंककर ही निकलें। बीमारी होने की आशंका होने पर तुरंत डॉक्टर से परामर्श करें। शुरुआत में ही अगर इलाज कराया जाए, तो छोटी सी सर्जरी करके इन दाग-धब्बों ठीक कर दिया जाता है। मेलानोमा एक तरह का कैंसर ही होता है। जो लोग ज्यादा सन-बाथ लेते हैं या धूप में रहते हैं, उनमें ये बीमारी ज्यादा होती है। गोरे लोग इसकी चपेट में ज्यादा आते हैं। तिल और मस्सों से इसकी शुरुआत होती है। इनका साइज बदलना शुरु हो जाता है। अगर कोई भी कैंसर एक ही जगह है, तो उसे सर्जरी के जरिए निकाल देते हैं, लेकिन अगर वह शरीर में फैल गया है, तो कीमो-थेरेपी या रेडियो-थेरेपी से उपचार करते हैं।

बार-बार गर्भपात से महिलाओं को होते हैं ये नुकसान

अनचाहे गर्भ को गिराने के लिए जोड़े अक्सर गर्भपात का सहारा लेते हैं लेकिन बहुत से लोगों को मालूम नहीं है कि लगातार गर्भपात कराना जीवन के लिए खतरनाक है। लगातार गर्भपात करवाने से भविष्य में होने वाली प्रेग्नेंसी कष्टदायक हो सकती हैं। ऐसा कहा जाता है कि जो महिलाएं ज्यादा गर्भपात कराती हैं। उनमें अवधि पूर्व जन्म या शिशु का वजन बहुत कम होना आदि परेशानियां पैदा होती हैं, जिन महिलाओं ने 3 या इससे अधिक बार गर्भपात कराया है। उनकी गर्भाशय ग्रीवा के लिए खतरा है। इसके अलावा इससे कुछ समय बाद अपने आप गर्भपात भी हो सकता है।

बहुत से लोगों को आजकल बांझपन, अस्थानिक गर्भावस्था या बच्चे के जन्म की परेशानी आदि समस्याएं उठानी पड़ती हैं। बांझपन से तात्पर्य है कि 12 माह की कोशिशों के बावजूद भी बच्चा नहीं लगना। सामान्य रूप से महिलाओं में बांझपन होने के कई कारण हैं लेकिन बहुत से डॉक्टर्स ऑपरेशन से गर्भपात कराने को इसका प्रमुख कारण मानते हैं।

गर्भपात करवाने से शरीर को नुकसान

बच्चा गिरना: गर्भपात कराने से भी कई बार गर्भाशय ग्रीवा क्षतिग्रस्त हो जाती है तो आगे गर्भपात में परेशानी हो सकती है। यदि गर्भपात के दौरान बच्चेदानी क्षतिग्रस्त हो जाती है तो यह बच्चे के लिए भी खतरनाक होती है।

समय पूर्व प्रसव: ज्यादा बार गर्भपात कराने का यह एक मुख्य कारण यह है कि इससे समय पूर्व प्रसव के अवसर बढ़ जाते हैं और गर्भ नाल इससे गलत रूप से बढ़ जाती है।

अस्थानिक गर्भावस्था: बार-बार गर्भपात कराने से अस्थानिक गर्भधारण का खतरा पैदा होता है। अस्थानिक गर्भावस्था ना केवल जीवन के खतरनाक है बल्कि इससे प्रजनन क्षमता भी कम हो सकती है।

पेडू के सूजन की बीमारी: पेडू के सूजन की बीमारी भी बार-बार गर्भपात से होती है। पीआईडी एक खतरनाक बीमारी है जो कि बांझपन का कारण भी बन सकती है। यह फैलोपियन ट्यूब के ऊतकों पर घाव पैदा कर सकती है, जिससे आगे चलकर प्रजनन क्षमता में कमी होती है। कभी कभी पीआईडी गर्भपात या अबॉरशन के बाद भी हो सकती है।

एन्डोमिट्राइटिस: ज्यादा गर्भपात कराने से यह होता है। अबॉरशन के बाद यह समस्या होती है। 20 से 29 वर्ष की महिलाएं खास तौर पर इसका शिकार ज्यादा होती हैं।

गर्भाशय में छेद होना: गर्भपात कराने वाली 2 से 3 प्रतिशत मरीजों में यह परेशानी होती है जो महिलाएं पहले बच्चे को जन्म दे चुकी हैं। उनमें यह ज्यादा होता है। इस समस्या से ग्रसित मरीजों में कई बार गर्भपात के दौरान सामान्य एनेस्थेसिया भी देना पड़ता है।

संक्रमण: बार-बार गर्भपात कराने से महिलाओं में स्वास्थ्य से संबन्धित समस्याएं पैदा होती हैं जैसे कि ज्यादा रक्तस्राव, संक्रमण, ऐंठन, एनेस्थेसिया से संबन्धित जटिलताएं, एम्बोलिम्, गर्भाशय में सूजन, एंडोटोक्सिक शॉक, गर्भाशय ग्रीवा का चोटिल होना, रक्तस्राव आदि।

पान का सेवन दिलाता है कई बीमारियों से राहत

पान कई बीमारियों का नाश करता है। हम यह बात मान सकते है कि पान के पत्तों में सुपारी, तंबाकू, चूना आदि लगा कर खाने से स्वास्थ संबंधी बीमारी हो सकती है। लेकिन आगर आप केवल पान के पत्तें का इस्तेमाल करते है तो यह काफी लाभकारी हो सकता है। इसे खानें से गंभीर से गंभीर बीमारियों से निजात मिल सकता है। इसमें कई तरह के एंटीसेप्टिक गुण छिपे हैं।

पाचन में सुधार

पान के पत्ता का वैसे माउथ फेशनर की तरह इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन इसे चबाने से हमारें लिए काफी फायदेमंद हो सकता है। जब हम इसे चबा कर खाते है तब हमारी लार ग्रंथि पर असर पड़ता है। इससे सलाइव लार बनने में मदद मिलती है। जो हमारी पाचन तंत्र के लिए बहुत ही जरुरी है। अगर आपने भारी भोजन भी कर दिया है उसके बाद आप पान खा लें। इससे आपको भोजन आसानी से पच जाएगा।

मुंह के कैंसर से बचाव

पान सिर्फ छोटी बीमारियों के लिए ही लाभकारी नही हा बल्कि गंभीर बीमारियों के लिए फायदेमंद है। पान के पत्ते को चबाने से मुंह के कैसंर से बचा जा सकता है।

माउथ-फ्रेशर

पान के पत्तों में कई ऐसे यौगिक होते हैं जो सांसों में बदबू को खत्म करता है। इसके अलावा पान में लौंग, सौंफ, इलायची जैसे विभिन्न मसाले मिलने से ये एक बेहतरीन माउथ-फ्रेशर भी बन जाता है।

प्रजनन क्षमता

पान को सेक्स का सिंबल भी माना जाता है। सेक्स संबंध से पहले खाने से इस क्रिया का अधिक सुख लिया जा सकता है। इसलिए नए जोड़े को पान खिलाने की परंपरा भी काफी पुरानी है, इसलिए इसे खाने को दिया जाता है।

मसूड़ों में सूजन आ जाने पर

अगर आपको मसूड़ों में गांठ, सूजन जा फिर खून आ रहा हो तो इसके लिए पान के पत्तों को पानी में उबालकर उन्हें मैश कर लें। इन्हें मसूड़ों पर लगाने से खून बहना बंद हो जाता है।

गैस्ट्रिक अल्सर

पान के पत्ते के रस को गैस्ट्रोप्रोटेक्टिव गतिविधी के लिए भी जाना जाता है जिससे गैस्ट्रिक अल्सर को रोकने में मदद मिलती है।

मसा का उपचार

पान के पत्तों से कब्ज दुर होती है इस दवा के इस्तेमाल से बिना कोई निशान छोड़े मसा को पूरी तरह से सही किया जा सकता है।

बाल तोड़ में सहायक

इसका आयुर्वेद में बाल तोड़ फोड़े-फुंसी के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है। पान के पत्ते गरम करके उसमें आरंडी का तेल लगाकर फोड़े पर लगाने से आराम मिलता है।

मधुमेह

पान पर अध्ययन यह दिखाते हैं, कि इसमें मधुमेह रोधी गुण होते हैं और यह इसके उपचार में मदद करता है।

खांसी करें सही

पान के पत्ते में शहद लगाकर खाने से खांसी में आराम मिलता है। इसके अलावा इससे छाती से बलगम दूर किया जा सकता है।

सिरदर्द में राहत

पान के पत्ते की एनाल्जेसिक और ठंडी विशेषताओं की वजह से ऊपर से लगाने में यह तेज सिर दर्द से राहत दिलाने में मदद करेगा।

क्या है हॉट योगा और इसे क्यों करें

योग के अदभुद लाभों के चलते न सिर्फ भारत में बल्कि पूरे विश्व में योग की ख्याति है। योगासनों के कई अलग अलग प्रकार और तकनीक हैं, और इनमें से एक है हॉट योगा। हॉट योगा प्राचीन योग का ही एक एक्स्ट्रीम फॉर्म है। इसे यदि साधारण योगा का मॉडर्न रूप कहा जाए तो गलत न होगा। हॉट योगा एक ग्लैमरस, लेकिन मुश्किल योग है। 90 मिनट के इसके एक सत्र में 26 जटिल आसन और दो प्राणायाम शामिल होते हैं। और इसकी खास बात है कि यह एक ऐसे कमरे में होता है, जहां का तापमान 40 डिग्री सेंटीग्रेड या उससे ऊपर रखा जाता है और वहां की आर्द्रता 50 प्रतिशत के आसपास होती है।

शायद इस आसनों को करते समय या इन्हें करने के पश्चात इस होने वाले गर्म तापमान के कारण ही इसे हॉट योगा कहा जाने लगा होगा। आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि जब तक पसीना बाहर न आए, एक्सरसाइज का फायदा नहीं होता है। हालांकि इस बात के पीछे का तथ्य यह है कि पसीना इस बात का संकेत होता है कि आपने जरूर के हिसाब से शारिरिक गतिविधी की है और कैलोरी बर्न की हैं। शायद यही सब सोचते हुए कुछ योग एक्सपर्ट ने इस पसीना बहाऊ योग का आविष्कार कर लिया वरना तो योग करने से पसीना कम ही छूटता है। ऐसा माना जाता है कि हॉट योगा दांपत्य जीवन के साथ-साथ, मस्तिष्क व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभदायक होता है, और इससे व्यक्ति तनाव मुक्त रहकर आत्मविश्वास से भरा रहता है। वैसे तो हॉट योगा के बहुत फायदे हैं लेकिन इसे करने से पहले इसके लिए ठीक ट्रेनिंग लेना बेहद जरूरी होता है।

शहीद भगत सिंह बस स्टैंड पर बना यात्री प्रतीक्षालय की हालत जर्जर और खराब

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: शहीद भगतसिंह बस स्टैंड नगर का एकमात्र बस स्टैंड जो कि स्टेट जमाने का नगर पालिका द्वारा बनाया गया। शहीद भगत सिंह बस स्टैंड की हालत में 4 वर्षों से कोई सुधार नहीं हुआ। शहीद भगत सिंह बस स्टैंड पर बना यात्री प्रतीक्षालय की हालत जर्जर और खराब हो रही है। यात्रियों को इधर-उधर बैठने के लिए दुकानों की शरण ले रहे हैं। बस स्टैंड पर बनी पानी की टंकी जिसमें आरो लगा हुआ था वह भी 3 वर्षों से बंद पड़ा है। यात्रियों को पानी पीने के लिए मजबूरन होटल से पानी की बोतल खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इस संबंध में कई बार नगर पालिका प्रशासन को अवगत कराने के बाद भी बस स्टैंड की व्यवस्था का सुधार नहीं हुआ। टैक्सी यूनियन के बबलू भाई ने बताया कि पानी पीने की टंकी बनी हुई है मगर 3 वर्षों से पानी नहीं मिल पा रहा है और जो यात्री प्रतीक्षालय बना हुआ है उसकी भी हालत बहुत खराब हो रही है जिसके कारण गर्मी के मौसम को देखते हुए नगर पालिका प्रशासन को यात्रियों को बैठने के लिए बस स्टैंड की व्यवस्था को शीघ्र सुधारा जाए। रात्रि में लाइट भी नहीं बहुत कम होने के कारण अंधेरा रहता है। बस स्टैंड पर बना हैलोजन की कुछ लाइट भी कई महीनो से बंद पड़ी है। जनता ने मांग की है कि शहीद भगत सिंह बस स्टैंड को सौंदर्य करण कर सुंदर बस स्टैंड बनाया जाए।

श्री सिद्धि विनायक गणेश जी को निमंत्रण पत्र

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: विप्र सेना बांसवाड़ा द्वारा आयोजित ड्ड30 अप्रैल भगवान परशुराम जन्मोत्सव पर बांसवाड़ा नगर मे भव्य शोभायात्रा एवं सामाजिक समरसता सम्मेलन को लेकर आज प्रथम पूज्य भगवान श्री सिद्धि विनायक गणेश जी को निमंत्रण देकर भगवान परशुराम जन्मोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ किया। ये अवसर पर राष्ट्रीय सचिव मुकेश पाठक, प्रदेश सचिव हेमेंद्रनाथ पुरोहित जिलाध्यक्ष मिलन पंड्या,शोभा यात्रा सयोजक ललित द्विवेदी,देवेंद्र शाह,युवा जिलाध्यक्ष मयंक व्यास,संजय गुप्ता,दीपक द्विवेदी गोपाल भाई,मुकेश भावसार, वासुदेव पांडया, बिना पंचाल आदि उपस्थित थे।

भाजपा सरकार के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन, राहुल गांधी और सोनिया गांधी के समर्थन में फूंका मोदी का पुतला

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: पिपली चौराहे पर कुशलगढ़ कांग्रेस विधायक रमिला खड़िया के नेतृत्व में ब्लॉक कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने हाय हाय के नारे के बीच देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला दहन किया पीसीसी सदस्य हसमुखलाल सेठ ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कांग्रेस की सोनिया गांधी और राहुल गांधी को ईडी की जांच करने को लेकर ब्लॉक कांग्रेस कार्यकर्ताओं में आक्रोश बना हुआ है। आज प्रदेश हाई कमान से निर्देशन पर पूरे राजस्थान में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी द्वारा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला दहन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्व में ईडी की जांच होने के बाद भी परेशान करने को लेकर भाजपा पार्टी भेदभाव कर रही है। अगर इसे नहीं रोका गया तो कांग्रेस कार्यकर्ताओं को आंदोलन करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। इस अवसर पर कुशलगढ़ विधायक रमिला खड़िया पीसीसी सदस्य हंसमुखलाल सेठ अशोक श्रीमार सरपंच संघ के अध्यक्ष कैलाश चंद्र कालू सिंह गरासिया पीर मोहम्मद विजय खड़िया यूथ कांग्रेस अध्यक्ष महेंद्र परमार लक्ष्मण दामा अध्यक्ष सचिन तलेसरा राजेश मीणा महेश कटारा कलावती ठाकुर हितेश रावत सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दंत चिकित्सा शिविर आयोजित

मरुधर विशेष

कोटपूतली, निकटवर्ती पनियाला मोड़ स्थित दिल्ली पब्लिक वर्ल्ड स्कूल में शनिवार को निःशुल्क दंत चिकित्सा शिविर आयोजित हुआ। शिविर में एकलव्य डेंटल कॉलेज के दंत चिकित्सक ऋषि नंदा एवं उनकी टीम के मुस्कान, प्राची, नेहा, रानी, मिंटू, निकिता, महक, आर्यन, लक्ष्य, पल्लवी, माधव, प्रेरणा, फैना द्वारा बच्चों के दांतों की जांच की गई। डॉ. नंदा ने बताया कि शिविर में 200 से ज्यादा बच्चों के दांतों की जांच करने के साथ-साथ निःशुल्क दवाईयां दी गई। उन्होंने दांतों में होने वाली बीमारियों, समय पर उनके ईलाज और दांतों की सही सफाई के बारे में बच्चों को जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दांत हमारे मुख का अहम हिस्सा होते हैं। इनके खराब होने से मुख की सुंदरता के साथ-साथ पाचन शक्ति पर भी बुरा असर पड़ता है और असहनीय पीड़ा को सहन करना पड़ता है। इसलिये दांतों की लम्बी उम्र के लिये दांतों की सफाई और उचित समय पर दांतों की जाँच जरूरी है। प्रधानाचार्या बिंदु सांगवान ने चिकित्सकों की टीम का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि ऐसे शिविरों से बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति ओर ज्यादा जागरूकता आती है। इस दौरान बड़ी संख्या में विधार्थी व शिक्षक मौजूद रहे।

नगर में साहित्य महाकुंभ 2025 का आयोजन

गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म बोले कार्यक्रम साहित्यकारों और संस्कृति के संरक्षण के लिए बहुत उपयोगी

मरुधर विशेष

संवाददाता सलीम खान डीग,। गृह, गौपालन, पशुपालन, डेयरी तथा मत्स्य विभाग राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म शनिवार और रविवार को डीग, भरतपुर और कोटा जिले के दौरे पर है। गृह राज्य मंत्री शनिवार को श्री ब्राह्मण समाज समिति धर्मशाला नगर के सभागार में आयोजित साहित्य महाकुंभ 2025 कार्यक्रम में पहुंचे जहां उन्होंने साहित्यकारों का हौसला अफजाई करते हुए उन्हें साहित्य जगत में भारतवर्ष का नाम रोशन करने के लिए प्रोत्साहित किया। साहित्य महाकुंभ 2025 एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय काव्य सितारे मंच जयपुर एवं ब्रजवानी जन सेवा समिति नगर द्वारा किया गया। गृह राज्य मंत्री ने बताया कि आयोजन समिति द्वारा आयोजित ये कार्यक्रम साहित्यकारों एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए बहुत उपयोगी साबित होगी। इसी आशा और विश्वास के साथ उन्होंने आयोजन समिति का बहुत-बहुत आभार प्रकट किया। इससे पहले, कार्यक्रम में मां शारदे के चित्र पर माल्यार्पण व वंदना के साथ

कार्यक्रम की शुरुआत की गई। आयोजकों ने गृह राज्य मंत्री का साफा बांधकर कर स्वागत सत्कार किया और कार्यक्रम में पहुंचने के लिए उनका धन्यवाद किया। इस अवसर पर गृह राज्य मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए वहीं कवि सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ प्रोफेसर इंदु प्रकाश सिंह धौलपुर और विशिष्ट अतिथि के रूप में काशीराम गर्ग, कैप्टन लक्ष्मी नारायण और कैलाश मिश्रा मौजूद रहे। ब्रजवाड़ी साहित्यिक संस्थान की ओर से प्रतिवर्ष साहित्य का महाकुंभ का आयोजन किया जाता है जिसमें संपूर्ण देश के चुनिंदा साहित्यकारों भाग लेते है। यहां सभी का एक साझा संग्रह प्रकाशित किया जाता है। साहित्य के सितारे, ब्रज रस गगरी, प्यास पनघट की, उजली राह सहित करीब 20 पुस्तकों का विमोचन किया गया। सभी साहित्यकारों को प्रशंसा पत्र देकर एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया तथा कुछ साहित्यकारों को वरसानो के नाम स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। इस दौरान महेश मंगल इटावा, नीरज पाण्डेय रायबरेली, भुवनेश खैर, किशोर पारीक जयपुर, ओमपाल सिंह फिरोजाबाद, वेद प्रकाश मणि अलीगढ़, धीरेंद्र हृदय आगरा, राजीव दसधार शिकोहाबाद, राम राहुल टूंडला, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला मध्यप्रदेश, सुबोध सुलभ टूंडला सहित दर्जनों कवियों ने काव्य पाठ किया।

निंभोर गांव में प्रधान कोटे से निर्माणाधीन इंटरलॉकिंग सड़क का प्रधान प्रतिनिधि एडवोकेट बस्तीराम यादव ने किया निरीक्षण

मरुधर विशेष

बहरोड़।(धर्मेन्द्र चर्खिया) पंचायत समिति बहरोड के ग्राम निम्भोर प्रधान कोटे से 6 लाख की लागत से निर्माणाधीन इंटरलॉकिंग सड़क का प्रधान प्रतिनिधि एडवोकेट बस्तीराम यादव एवं सरपंच प्रतिनिधि सुरेश चंद्र भेड़ी, रामकिशन गुर्जर, रामस्वरूप, राधेश्याम, रामकरण, पिंटू, विक्रम सतवीर, मुकेश ,पवन सहित दर्जनों लोगों ने किया निरीक्षण निरीक्षण के दौरान इंटरलॉकिंग सड़क निर्माण कार्य काफी संतोषजनक मिला तथा शेष काम को ओर गुणवत्तापूर्ण किए जाने के निर्देश दिए गए ग्रामवासियों ने प्रधान द्वारा गांव में करवाए गए विकास कार्यों के लिए हार्दिक आभार सहित धन्यवाद ज्ञापित किया तत्पश्चात उपस्थित लोगो के द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया

योगी आदित्यनाथ जी को दिया धोलागढ़ यज्ञ का निमंत्रण

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: धोलागढ़ में होने वाले 45 दिवसीय दिव्य भव्य श्रावण कुंभ महोत्सव को लेकर तैयारियाँ जोरो से चल रही है। इस हेतु देश की जानी मानी हस्तियों को आमंत्रित किया जा रहा है। इसी क्रम में शुक्रवार शाम को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को गोरखपुर जा कर यज्ञ में आने का निमंत्रण दिया। रुद्र वाहिनी संघ के मुकेश भोई ने बताया कि अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री महोदय योगी आदित्यनाथ जी को अघोर पशुपति पीठ के पीठाधीश्वर महंत योगी प्रकाशनाथ महाराज तथा भर्तृहरि गुफा के पीरजी योगी रामनाथ महाराज ने धोलागढ़ यज्ञ का निमंत्रण दे कर यज्ञ में पधारने

का आग्रह किया। इस दौरान गोपाल मीणा भानौर तथा धीरेंद्र सिंह भाटी मोही राजसमंद उपस्थित रहे। ज्ञात रहे कि वर्ष 2020 में कोरोना के कारण स्थगित धोलागड़ का बहुप्रतीक्षित यज्ञ गुरुपूर्णिमा को दिनांक 10 जुलाई से प्रारंभ होने वाला है । 45 दिवसीय दिव्य भव्य श्रावण कुंभ महोत्सव अंतर्गत श्री श्री 1008 अतिरुद्र महायज्ञ एवं श्री सहस्त्र चंडी महायज्ञ के साथ 51 लाख पार्थवेश्वर पूजन किया जाएगा। श्रावण कुंभ महोत्सव के दौरान विभिन्न संतों एवं कथा वाचको की कथाओ का लाभ भी भक्तों को प्राप्त होगा जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम परम पूज्य सरस्वती दीदी की श्री शिव महापुराण कथा, परम पूज्य कमलेश भाई शास्त्री की रामकथा,परम पूज्य महामंडलेश्वर उत्तम स्वामी जी की भागवत कथा तथा परम पूज्य गोपालाचार्य स्वामी जगदीश गोपालानन्द सरस्वती की गौ कृपा कथा का रसास्वादन प्राप्त होगा। सामाजिक समरसता सहित आध्यात्मिक ऊर्जा के संचार, पर्यावरण तथा प्रकृति के संरक्षण निमित आयोजित होने वाली इन कथाओं को लेकर तैयारियां चल रहीं हैं। ज्ञात रहे कि पूज्य गुरुदेव योगी प्रकाशनाथ जी महाराज के पावन सानिध्य मे होने वाले दिव्य भव्य श्रावण कुंभ महोत्सव कों लेकर पिछले एक वर्ष से तैयारियां चल रही है।

विप्र फाउंडेशन जिला अधिवेशन आज गढ़ी परतापुर में

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: विप्र फाउंडेशन जिला अधिवेशन के सफल आयोजन हेतु विप्र फाउंडेशन के प्रदेश महामंत्री योगेश जोशी, जिला अध्यक्ष ललित जी जिला महामंत्री शशि कुमार शर्मा व नव मनोनीत जिला मंत्री के.के.पण्डया सा.के आतिथ्य में ग्रीन फील्ड विद्यालय परतापुर में बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में जिला स्तर से कार्य शाला में अधिक से अधिक संख्या और अधिक से अधिक ग्राम इकाइयों से प्रतिनिधित्व पर जोर दिया गया। साथ ही लीमथान में 30 अप्रेल परशुराम जन्मोत्सव से 2 मई शंकराचार्य जयंती तक तीन दिवसीय आयोज्य 101 कुंडीय विष्णु महा यज्ञ और विशाल गंगा जल कलश यात्रा कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए

ब्लाको से प्रतिनिधियों को को अधिक संख्या में सर्व सनातन समाज को जोड़ने का आव्हान किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ वृद्धजन सम्मान, राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभावान उपलब्धि प्राप्त मेधावी छात्रों का अभिनंदन,व मातृशक्ति की उपस्थिति पर विचार व्यक्त किए गए। इस अवसर पर विप्र फाउंडेशन द्वारा चलाए जा रहे प्रकल्पों पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में सुधिर भट्ट , कृपाशंकर जोशी जिला सदस्य रजनीकांत ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र उपाध्याय, वासुदेव मेहता, ब्लॉक अध्यक्ष विजय कुमार शर्मा , जिला उपाध्यक्ष जुगल पाठक, संगठन मंत्री दीपक जोशी, दिलीप मेहता डडूका, गिरीश .वी.पंडया, ब्लॉक महामंत्री भरत दवे, सचिन शर्मा, जुगल पंड्या, गौरव शर्मा कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। कार्यक्रम का संचालन ब्लाक गढ़ी उपाध्यक्ष रमेश व्यास व आभार गिरीश एस पंड्या ने व्यक्त किया।

राष्ट्र सेवा के लिए निष्ठावान, समय समर्पित पीढ़ी की निर्मात्री-विद्या भारती-मानेग पटेल

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: विद्या भारती संस्थान बांसवाडा द्वारा संचालित विद्या निकेतन बड़ोदिया के द्वारा शिक्षा में विद्या भारती की देन- पर जन गोष्ठी चोखला गांव में आयोजित की गई। ग्राम गोष्ठी में विद्या भारती चितौड प्रान्त के सचिव मानेग पटेल विभाग व जिला संस्कार केंद्र प्रमुख गोपाल राव एवं नरेश पाटीदार की उपस्थिति रही।समारोह की अध्यक्षता चोखला ग्राम पंचायत उप सरपंच व शिक्षाविद अक्षय राज पटेल ने की। मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्वलित ककर समारोह की शुरुआत हुई।अतिथि स्वागत व विद्यालय गतिविधि का प्रोजेक्टर संचालित परिचय संस्था प्रधान सुरेश त्रिवेदी ने करवाया।विभिन्न सरकारी सेवाओं में लगे विद्यालय के 25 से अधिक पूर्व छात्र भैया बहिनों का संस्थान की ओर बहुमान किया गया। स्वागत उद्बोधन में शिक्षाविद विट्ठल पाटीदार ने कहा कि विद्या निकेतन में शिक्षा का धरातलीय स्वरूप देखने को मिलता हैं।विद्या भारती व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की ओर अग्रेसित है जिसकी

समाज मे मान्यता बढ़ रही है। इस अवसर पर पूर्व छात्र लविश पाटीदार हेमंत मोहित जिगर प्रियका पाटीदार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए एक स्वर में सबने विद्या निकेतन की सर्वांगीण विकास की संकल्पना व कार्यपद्धति की सराहना की। उन्होंने कहा विद्या निकेतन में सीखे संस्कार व परिश्रम के स्वभाव ने हमे जीवन मे सफलता के शिखर तक पहुचाया। प्रान्त सचिव मानेग पटेल ने कहा कि विद्या भारती ने नोकरी देने या धन उपार्जन व अट्टालिकाएं खड़ी करने के लिए विद्यालय नही खोले है। विद्यालय संचालन में विद्या भारती की सोच अच्छे व सच्चे नागरिक तैयार करना है जिससे समाज व राष्ट्र सबल हो सके।विद्या निकेतन बालको में समय का समर्पण जगाती है।माँ व मातृ भूमि हमारे लिए श्रेष्ठ है यह भाव बालको में जगाने का कार्य विद्या भारती कर रही है।समाज मे बढ़ती अंग्रेजीत की मानसिकता ने समाज मे अनेकों विकृतियां पैदा की है।उन्होंने कहा कि किसी भी को भाषा सीखने व सिखाने में कोई परहेज नही है किंतु हिन्दी एक वैज्ञानिक व संस्कार को पुष्ट करती है अतः शिशु कक्षाओ में शिक्षण का माध्यम हिन्दी भाषा सर्वदा वैज्ञानिक है।समारोह के अध्यक्ष अक्षयराज ने कहा कि शिक्षा वही है जो संस्कार दे और यह मूल कार्य विद्या निकेतन के विद्यालयों में परिलक्षित होते है। संचालन महेंद्र चौहान ने किया व आभार हितेश शुक्ला ने माना।

नारायणपुर में प्रशाशन ने चलाया बुलडोजर, सरकारी रास्तों से हटाया अतिक्रमण

मरुधर विशेष

बानसूर सुरेश कुमार सैनी
नारायणपुर के कोठिया में आज प्रशाशन ने रास्ते से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। प्रशाशन ने पुलिस जाब्ते के साथ जेसीबी मशीन की सहायता से सरकारी रास्ते से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। नारायणपुर तहसीलदार अनिल कुमार ने बताया कि उपखंड अधिकारी की ओर से राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के उप धारा 251 के तहत सरकारी रास्तों से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। ग्रामीणों ने सरकारी रास्तों पर अतिक्रमण कर रखा था। जिसको लेकर पहले भी पटवारी की ओर से अतिक्रमणकारियों को अतिक्रमण हटाने के लिए पाबंद किया गया था लेकिन अतिक्रमण नहीं हटाया गया। जिसको लेकर आज राजस्व विभाग टीम और पुलिस जाब्ते के साथ सरकारी रास्ते से जेसीबी मशीन की सहायता से अतिक्रमण हटाया गया और अतिक्रमण करने वालो को पाबंद किया गया।

दर्शना त्रिवेदी को विप्र महिला प्रकोष्ठ जिला उपाध्यक्ष (वरिष्ठ) ओर आशा उपाध्याय बांसवाड़ा तहसील अध्यक्ष नियुक्त

डा. दर्शना त्रिवेदी

आशा उपाध्याय

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: विप्र फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ कार्यकारी जिला अध्यक्ष अर्चना दवे ने प्रदेश महा मंत्री महिला प्रकोष्ठ डा. कीर्ति आचार्य के निर्देश पर डा. दर्शना त्रिवेदी को महिला प्रकोष्ठ जिला उपाध्यक्ष (वरिष्ठ) नियुक्त किया वही आशा उपाध्याय (ठीकरिया) को बांसवाड़ा तहसील अध्यक्ष नियुक्त किया। उक्त जानकारी महिला प्रकोष्ठ जिला महा मंत्री बरखा जोशी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी।

केन्द्रिय मंत्री मेघवाल से मिले विधायक शेखावत कोटपूतली में जिला एवं सत्र न्यायालय (डीजे कोर्ट) खोलने की मांग को लेकर दिया ज्ञापन

कोटपूतली व बहरोड़ के बीच वर्चस्व की लड़ाई बन चुकी है डीजे कोर्ट की मांग

मरुधर विशेष

कोटपूतली, नवगठित जिला कोटपूतली-बहरोड़ के मुख्यालय कोटपूतली में जिला एवं सत्र न्यायालय (डीजे कोर्ट) खोले जाने को लेकर निकटवर्ती बानसूर क्षेत्र के विधायक देवीसिंह शेखावत द्वारा निरन्तर प्रयास किये जा रहे है। उल्लेखनीय है कि डीजे कोर्ट की मांग को लेकर कोटपूतली व बहरोड़ के अभिभाषक संघ में संघर्ष जारी है। विगत दिनों दोनों ही जगहों पर इस मांग को लेकर कार्य बहिष्कार, पेन डाउन हड़ताल व लगभग दो माह तक धरना प्रदर्शन एवं क्रमिक अनशन आदि किये जा चुके है। कोटपूतली में जारी हड़ताल को जिले के 03 विधायकों क्रमशः हंसराज पटेल, देवीसिंह शेखावत व कुलदीप धनकड़ द्वारा खत्म करवाया गया तो बहरोड़ में वकीलों की हड़ताल स्थानीय विधायक जसवंत सिंह यादव व केन्द्रिय मंत्री भूपेन्द्र यादव द्वारा खत्म करवाई गई। कोटपूतली में डीजे कोर्ट की मांग को लेकर जिला अभिभाषक संघ, कोटपूतली के बैनर तले बानसूर, विराटनगर, पावटा, नारायणपुर के अभिभाषक संघ लामबंद है। वहीं दुसरी बहरोड़ एवं नीमराणा के अधिवक्ता भी इसको लेकर एकजुट है। इस मांग को लेकर बानसूर विधायक देवीसिंह शेखावत द्वारा विगत दिनों विधानसभा में आवाज उठाई गई थी। वहीं इसी क्रम में विधायक शेखावत ने दिल्ली पहुँचकर केन्द्रिय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल से शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने मेघवाल को ज्ञापन सौंपकर कोटपूतली में डीजे कोर्ट एवं नारायणपुर उपखण्ड में सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट (एसीजेएम) कोर्ट खोले जाने की मांग की। विधायक शेखावत के ज्ञापन पर केन्द्रिय मंत्री मेघवाल ने सकारात्मक कार्यवाही का आश्वासन दिया है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि डीजे कोर्ट को लेकर निरन्तर राजनीति गहराती जा रही है। इस मांग

को लेकर कोटपूतली के पक्ष में क्षेत्रीय विधायक हंसराज पटेल समेत बानसूर विधायक देवीसिंह शेखावत व विराटनगर विधायक कुलदीप धनकड़ लामबंद है तो बहरोड़ में डीजे कोर्ट खोले जाने की मांग को लेकर बहरोड़ विधायक जसवंत सिंह यादव के प्रयासों को अलवर सांसद व केन्द्रिय मंत्री भूपेन्द्र यादव का सहयोग मिल रहा है। कुछ ही दिनों में डीजे कोर्ट सहित सीजेएम कोर्ट खोले जाने हेतु सभी 08 नवगठित जिलों में प्रक्रिया शुरू होने वाली है। इसके साथ ही राज्य सरकार की बजट घोषणा अनुरूप मिनी सचिवालय का निर्माण कहां होगा। इसका फैसला भी किया जायेगा। विगत दिनों कोटपूतली के दौरे पर आये मुख्य सचिव सुधांशु पंत के समक्ष भी जिला प्रशासन द्वारा डीजे कोर्ट की मांग को लेकर कोटपूतली व बहरोड़ के बीच चल रहे गतिरोध के बिंदु को रखा गया था। अब इसको लेकर राजस्थान हाईकोर्ट व राज्य सरकार द्वारा गठित कमेटी को अन्तिम निर्णय लेना है। फिलहाल डीजे कोर्ट व मिनी सचिवालय सभी नवगठित जिलों में कहां बनेगा, इसकी बजट घोषणा तो हो चुकी है लेकिन राज्य सरकार द्वारा कमेटी का गठन अभी प्रक्रियाधीन है, जो महज कुछ ही दिनों में होने वाला है। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय कोटपूतली-बहरोड़ के जिला बनने पर अस्थाई तौर पर सभी जिला स्तरीय कार्यालय कोटपूतली में खोले जाने पर सहमति बनी थी। वहीं राजस्थान हाईकोर्ट ने भी कोटपूतली में ही डीजे कोर्ट खोलने की अनुशंषा राज्य सरकार को विगत 20 अक्टुबर 2023 को भेजी थी। लेकिन इससे पूर्व ही विधानसभा चुनाव की आचार संहिता प्रभावी हो गई। जिससे जिला कलक्टर व एसपी कार्यालय तो कोटपूतली में खुल गये, लेकिन चुनाव आचार संहिता लग जाने के कारण डीजे कोर्ट खोला नहीं जा सका। यही नहीं विधानसभा चुनाव के बाद प्रदेश में भाजपा की सरकार बन जाने एवं नई सरकार द्वारा सभी नवगठित जिलों का रिव्यु शुरू कर दिये जाने पर यह मामला खटाई में पड़ गया एवं बाद में कोटपूतली व बहरोड़ के बीच विवाद का कारण बन गया। बहरहाल आने वाले दिनों में कोटपूतली व बहरोड़ के बीच डीजे कोर्ट की मांग को लेकर पलड़ा किसका भारी रहता है, यह तो वक्त ही बतायेगा। लेकिन कोटपूतली के समर्थन में जिले के 04 में से 03 विधायक एवं बहरोड़ के समर्थन में वहां के स्थानीय विधायक समेत केन्द्रिय मंत्री भूपेन्द्र यादव नजर आ रहे है। ऐसे में जिला अभिभाषक संघ, कोटपूतली को इस सम्बंध में जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेन्द्र सिंह को सक्रिय करने के साथ-साथ भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री एवं कोटपूतली के मूल निवासी सुनील बंसल को भी साथ लाने के अहम प्रयास करने होगें।

मुंडावर पूर्व विधायक एवं संसदीय सचिव रहे धर्मपाल चौधरी की सातवीं पुण्यतिथि मनाई

स्मारक स्थल पर हवन यज्ञ कर दी श्रद्धांजलि

मरुधर विशेष

नीमराना(सुनील मेघवाल) समीपवर्ती जाट बहरोड गांव में शनिवार को मुंडावर पूर्व विधायक एवं संसदीय सचिव रहे धर्मपाल चौधरी की सातवीं पुण्यतिथि मनाई गई। धर्मपाल चौधरी के पुत्र पूर्व विधायक मंजीत चौधरी ने बताया कि सातवीं पुण्यतिथि के अवसर पर सुबह हवन यज्ञ किया गया। हवन यज्ञ के बाद श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। पिता धर्मपाल चौधरी 19 अप्रैल 2018 को देवलोक गमन कर गए थे आज शनिवार को सातवीं पुण्यतिथि मनाई गई। प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर दिवंगत पूर्व विधायक एवं संसदीय सचिव धर्मपाल चौधरी की पत्नी विमला चौधरी ,बड़े पुत्र अमित चौधरी, छोटे पुत्र मुंडावर पूर्व विधायक मंजीत चौधरी,पूर्व जिला परिषद मनीषा साहिब सिंह वर्मा,शीशराम चौधरी, जाट बहरोड मंडल अध्यक्ष मनीष यादव, जाट बहरोड पूर्व मंडल अध्यक्ष रतन सेठ, रमेश प्रधान फौलादपुरिया, विशाल शर्मा सकतपुरा, नीमराना डीएसपी सचिन शर्मा, टेकचंद नाहरवाल जिंदोली, शकुंतला मेघवाल, नीमराना मंडल अध्यक्ष राकेश खंडेलवाल, लोकेश भारद्वाज, रमेश तक्षक, जाट बहरोड सरपंच सुरेंद्र चौधरी, आशीष सहित काफी संख्या में क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

बड़ीका गांव में एक बाईस वर्षीय युवक की हृदय गति रूकने से हुई मौत

मरुधर विशेष । दिनेश लेखी

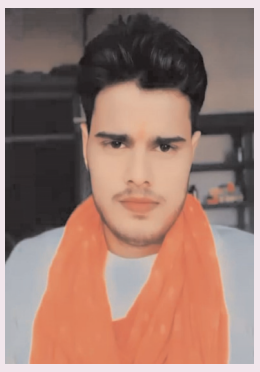

कठूमर । थाना क्षेत्र के बड़ीका गांव में एक बाईस वर्षीय युवक की हृदय गति रूकने से मौत हो गई। जानकारी के अनुसार रविन्द्र चौधरी पुत्र नेतराम चौधरी शुक्रवार शाम को अपने घर पर था कि अचानक उसके सीने में दर्द उठा और उसे इलाज के लिए कठूमर सीएचसी लाया गया बाद में ईलाज के लिए अलवर ले जाते समय युवक की रास्ते में मौत हो गई।

सीवरेज लाइन की जहरीली गैस से दो मजदूरों की हुई मौत, कस्बे में फैली सनसनी

मरुधर विशेष

दिनेश लेखी खेड़ली । कस्बे में शनिवार को एक दर्दनाक हादसा हो गया, जिसमें सीवरेज लाइन में दम घुटने से दो लोगों की मौत हो गई। यह हादसा खेरली कठूमर रोड नदबई मोड पर स्थित नवकार वाटिका पेपर मिल में हुआ, जहां सफाई के लिए उतरे लच्छी पुत्र मंगतू उम्र 50 वर्ष और उसे देखने गया 13 वर्षीय हेमराज उर्फ आकाश पुत्र सागर वाल्मीकि की जान चली गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार लच्छी काफी देर तक सीवरेज लाइन से बाहर नहीं आया, जिस पर उसके साथ मौजूद लोग व खाना लेकर पहुंचे 13 वर्षीय बालक हेमराज उसे देखने नीचे उतरा। उसने लच्छी को बचाने की कोशिश की, लेकिन वह खुद भी जहरीली गैस की चपेट में आ गया। दोनों को तुरंत बाहर निकालकर

मृतक लच्छी

खेड़ली उप-जिला अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पर खेड़ली थाना अधिकारी धीरेंद्र गुर्जर मौके पर पहुंचे और जाप्ते के साथ अस्पताल पहुंचे। साथ ही मृतकों के

मृतक हेमराज उर्फ आकाश

परिजन और बाल्मीकि समाज के लोग भी अस्पताल पहुंच गए। नगर पालिका के वाइस चेयरमैन संदेश खंडेलवाल, पार्षद मुरारीलाल शर्मा और व्यापार समिति अध्यक्ष प्रमोद बंसल ने भी अस्पताल पहुंचकर मृतकों के परिजनों से मुलाकात की। घटना के बाद अस्पताल परिसर को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया

गया है। परिजन मृतकों को न्याय दिलाने की मांग कर रहे हैं, जिसमें सरकारी नौकरी, आर्थिक सहायता व अन्य मुआवज़ा शामिल हैं। परिजनों ने मांगें पूरी नहीं होने तक पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया है। बातचीत के असफल रहने पर वाल्मीकि समाज के लोगों और मृतकों के परिजनों ने आक्रोशित होकर हिंडौन फाटक पर जाम लगा दिया, जिससे यातायात बाधित हो गया। प्रशासन की ओर से प्रयास जारी हैं कि परिजनों की मांगें सुनी जाएं और स्थिति को शांत किया जा सके।

बानसूर के होलावास में सरपंच सतपाल चौधरी ने की अनूठी पहल, पक्षियों के लिए लगाए परिंडे

मरुधर विशेष

बानसूर सुरेश कुमार सैनी भीषण गर्मी के प्रकोप को देखते हुए, बानसूर के होलावास ग्राम पंचायत के सरपंच सतपाल चौधरी ने सराहनीय पहल की शुरुआत की है। चौधरी, जो हर वर्ष ग्रीष्म ऋतु में बेजुबान पक्षियों के लिए पानी के बर्तन (परिंडे) लगाने का कार्य करते हैं, ने इस वर्ष भी इस नेक कार्य को आगे बढ़ाया है। आज, ग्राम पंचायत सरपंच ने इस पहल के तहत सभी सरकारी कार्यालयों के सामने लगभग 31 परिंडे स्थापित किए। इस अवसर पर सुरेश नागा, विक्रम यादव, मुकेश हुड़ीवाल, करणसिंह राठौड़, सतेन्द्र यादव के साथ-साथ कई वार्ड पंच और ग्रामीण भी उपस्थित रहे। सरपंच सतपाल चौधरी ने बताया कि गर्मी में पक्षियों को पानी की समस्या होती है और यह प्रयास उन्हें राहत पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया है। उन्होंने अन्य ग्रामीणों से भी अपील की कि वे अपने घरों और आसपास के क्षेत्रों में पक्षियों के लिए परिंडे लगाएं ताकि इस तपती गर्मी में किसी भी बेजुबान को प्यासा न रहना पड़े। सरपंच की इस मानवीय पहल की क्षेत्र में सराहना हो रही है।

दुष्कर्म का फरार आरोपी गिरफ्तार, घटना के बाद से ही चल रहा था फरार

आरोपी धर्मपाल उर्फ धर्मा सैनी सरूण्ड थाने के टॉप 10 अपराधियों में है शामिल

मरुधर विशेष

कोटपूतली, निकटवर्ती सरूण्ड थाना पुलिस ने दुष्कर्म के एक मामले में फरार चल रहे एक आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। एसएचओ बाबूलाल मीणा ने जानकारी देते हुये बताया कि इस सम्बंध में पीड़िता ने दर्ज करवाया था कि आरोपी धर्मपाल पुत्र श्रीराम सैनी विगत दो वर्षो से मेरे साथ जबरन गलत काम कर रहा है। विरोध करने पर बदनाम करने की धमकी देता है। विगत 19 फरवरी

2025 को आरोपी धर्मपाल पीड़िता के घर पर आया एवं गलत काम करने का प्रयास किया तो उसके विरोध करने पर मारपीट की। पीड़िता के हो हल्ला करने पर आरोपी उसके घर से भाग गया। इसकी सूचना पुलिस को देने पर सम्बंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज करते हुये घटना स्थल का निरीक्षण कर एफएसएल एवं मोबाईल टीम बुलाकर साक्ष्य एकत्रित किये गये। साथ ही पीड़िता एवं गवाहों के बयान लेते हुये पीड़िता के बयान न्यायालय में भी रिकॉर्ड करवाये गये। पुलिस द्वारा आरोपी धर्मपाल के सभी ठीकानों पर दबिश दी गई। वहीं शुक्रवार 18 अप्रैल को मुखबीर की सूचना पर अभियुक्त धर्मपाल उर्फ धर्मा (29) पुत्र श्रीराम सैनी निवासी वार्ड नं. 06 ग्राम हरसौरा हाल आबाद गायत्री विहार कॉलोनी, गोरधनपुरा को पुलिस ने कोटपूतली पुलिया के पास से दस्तयाब कर गिरफ्तार कर लिया। अभियुक्त धर्मपाल सरूण्ड थाने के फरार चल रहे आरोपियों व टॉप 10 अपराधियों की सूची में भी शामिल है। एसएचओ बाबूलाल मीणा ने बताया कि किसी भी प्रकरण में फरार चल रहे अभियुक्त को बक्शा नहीं जायेगा।

ग्रीष्म ऋतु के चलते पेयजल आपूर्ति व्यवस्था का एसडीएम ने किया औचक निरीक्षण

मरुधर विशेष । दिनेश लेखी

कठूमर। उपखण्ड अधिकारी श्याम सुंदर चेतीवाल ने शनिवार को जिला कलक्टर द्वारा प्रदत्त निर्देशों की पालना में तहसील क्षेत्र कठूमर व खेड़ली में ग्रीष्म ऋतु के चलते पेयजल आपूर्ति व्यवस्था का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उपखंड क्षेत्र में भीषण गर्मी में पेयजल आपूर्ति व्यवस्था सुचारु हो रही है या नहीं इसकी जमीनी

हकीकत देखने एसडीएम ने कठूमर खेडली क्षेत्र का भ्रमण कर पेयजल आपूर्ति व्यवस्था का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने घरों हो रही पेयजल आपूर्ति के पानी प्रेशर की स्थिति को भी मौके पर देखा एवं क्षेत्र के वासिंदों से पेयजल आपूर्ति व्यवस्था तथा पानी के प्रेशर की स्थिति का भी फीडबैक लिया। जलदाय विभाग महेंद्र मीना, कनिष्ठ अभियन्ता टीम के साथ मौजूद थे। इस मौके पर एसडीएम ने सम्पूर्ण क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए गए।

विप्र फाउंडेशन के जिला अधिवेशन की तैयारियां पूर्ण

पदाधिकारियों ने व्यवस्थाओं को दिया अंतिम रूप

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा बांसवाड़ाः विप्र फाउंडेशन के जिला अधिवेशन की तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। आयोजन की रूपरेखा एवं व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने हेतु कार्यक्रम स्थल प्रभाशंकर पण्ड्या कॉलेज पहुचकर जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र उपाध्याय, गढ़ी ब्लॉक अध्यक्ष विजय कुमार शर्मा,संरक्षक गिरीश पण्ड्या ने व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया।अधिवेशन में जिला स्तर से अधिक से अधिक प्रतिनिधियों की भागीदारी एवं ग्राम इकाइयों से मजबूत सहभागिता सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। साथ ही लीमथान में 30 अप्रैल से प्रारंभ होकर 2 मई तक आयोजित 101 कुंडीय विष्णु महायज्ञ एवं गंगाजल कलश यात्रा में ब्लॉकों से अधिकाधिक संख्या में विप्रजनों की सहभागिता सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया है: पंजीयन समितिः जुगल पंड्या एवं सचिन शर्मा भोजन समितिः सुधीर भट्ट, नयनेश भट्ट एवं योगेश भट्ट जल व्यवस्थाः राजेश आचार्य (नगर अध्यक्ष) मंच सज्जा समितिः दुष्यंत जोशी एवं विनय भूषण भट्ट
अतिथि स्वागत समितिः योगेश दवे मेंतवाला, प्रीतेश उपाध्याय, कविता उपाध्याय (खोडन), शुभम पंड्या (आसोडा), हर्षा दवे एवं दर्शनी पंड्या कार्यक्रम का संचालन जिला प्रवक्ता विनोद पानेरी द्वारा किया जाएगा तथा उन्हें सहयोग प्रदान करेंगे ब्लॉक उपाध्यक्ष रमेश व्यास। कार्यक्रम की तैयारी और व्यवस्थाओं की निगरानी हेतु जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र उपाध्याय की देखरेख में पीएसपी कॉलेज के विशेष पण्ड्या द्वारा व्यवस्थाओं को समन्वित किया जा रहा है। समाचार पत्रों में समाचार संप्रेषण हेतु रमेश व्यास एवं वासुदेव मेहता को मनोनीत किया गया है। विप्र फाउंडेशन के युवा सदस्यों को भी विभिन्न दायित्वों में नियुक्त कर उन्हें आगामी कार्यक्रमों की तैयारी में लगाया गया है। सुंदरकांड आयोजन में भी समाज के प्रबंधकों का योगदान सुनिश्चित किया गया है।कार्यक्रम में वयोवृद्ध विप्रजनों का सम्मान, मेधावी विद्यार्थियों का अभिनंदन और मातृशक्ति की भागीदारी सुनिश्चित की गई है। संपर्क अभियान के तहत असोडा,खोडन, पालोदा,सुन्दनी बरोडिया,बोरी, झडस,बोंदिया, डडुका,खेरन का पारड़ा,गोपीनाथ का गड़ा,पाराहेड़ा, सरेड़ी,आसन, साकरिया,पिछोड़ा बड़ा,गढ़ी-परतापुर नगर,साकरिया, खेड़ा,चौपासाग इत्यादि गांवों में और जिला कार्यकारिणी द्वारा भी आमंत्रण पत्र वितरित कर सभी को आमंत्रण दिया गया। ग्राम आसोड़ा में महेंद्र पंड्या, गिरजा शंकर पंड्या एवं सूर्यनारायण पंड्या ने विप्रजनों की ओर से तन-मन-धन से सहयोग का आश्वासन दिया।सभा में नरेन्द्र पंड्या, शुभम पंड्या, कला राठौड़ धाम के महंत से आशीर्वाद प्राप्त किया गया। संचालन हिमेश उपाध्याय व आभार लोकेश पंड्या ने जताया। ब्लॉक अध्यक्ष विजय कुमार शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम को ऐतिहासिक स्वरूप देने हेतु प्रचार-प्रसार, संपर्क एवं समर्पण भाव से संपूर्ण टीम सक्रिय है।

भाजपा का वक्फ सुधार जनजागरण अभियान, बानसूर विधानसभा में नियुक्त किए कार्यकर्ता

मरुधर विशेष

बानसूर सुरेश कुमार सैनी भारतीय जनता पार्टी जिला अलवर उत्तर ने वक्फ सुधार जनजागरण अभियान को लेकर सभी मंडलों में मंडल प्रभारी, संयोजक ओर सहसंयोजक की नियुक्ति की गई है।
जिसको लेकर बानसूर विधानसभा में हरसौरा मंडल में हर्ष यादव को मंडल प्रभारी, सुंदरलाल गुर्जर संयोजक और शीशपाल यादव को सहसंयोजक नियुक्त किया है। वही रामपुर मंडल में शिवचरण यादव मंडल प्रभारी, प्रभुदयाल चौधरी (पीडी) संयोजक, कैलाश शर्मा सहसंयोजक नियुक्त किए गए। बानसूर मंडल में रमेश रावत मंडल प्रभारी, मुकेश सुरेला संयोजक, अशोक भरगड सहसंयोजक नियुक्त किए गए। नारायणपुर मंडल में कपिल वेद मंडल प्रभारी, पूर्ण सोनी संयोजक, कमलेश शर्मा सहसंयोजक नियुक्त किए गए। निमुचाना मंडल में मंडल प्रभारी डॉ. नीलम यादव, दयाराम गुर्जर संयोजक और सहसंयोजक रविकांत शर्मा नियुक्त किए गए।
केन्द्र सरकार की ओर से वक्फ कानून को लेकर भाजपा वक्फ सुधार जनजागरण अभियान की तैयारी शुरू कर दी हैं। जिसको लेकर प्रत्येक मंडल पर भाजपा कार्यकर्ताओ को नियुक्त किया गया है। 20 अप्रैल से 5 मई तक चलने वाले इस अभियान में घर घर जाकर वक्फ कानून से जुड़ी सही जानकारी लोगो तक पहुंचाने का कार्य किया जायेगा।

नशा मुक्त भारत अभियान के तहत बच्चों को नशा मुक्त बनाने के दिए आवश्यक दिशा निर्देश

मरुधर विशेष । दिनेश लेखी

कठूमर। उपखंड क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नूरपुर में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत बच्चों को नशा मुक्त समाज बनाने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। प्रधानाचार्य भारत भूषण ने बताया कि नशा मुक्ति अभियान के तहत चयनित शारीरिक शिक्षक देवेंद्र सिंह सिद्धू के नेतृत्व में बच्चों को सोशल मीडिया पर नशे का विज्ञापन करने वाले व्यक्तियों को फॉलो नहीं करने के निर्देश भी दिए क्योंकि बच्चे सोशल मीडिया के माध्यम से नशे का विज्ञापन करने वाले अभिनेताओं से प्रेरित होकर के गलत दिशा में चले जाते है। बच्चों को गुटका, तंबाकू ,सिगरेट, बीड़ी तथा अन्य सभी प्रकार के नशे से दूर रहने के निर्देश दिए गए तथा अपने आसपास समाज में नशा नहीं करने के लिए लोगों को प्रेरित करने के निर्देश भी दिए गए। इस मौके पर मनोज सैनी, बृजेंद्र मीणा, ललित ने मानवीय मूल्यों की व्याख्या करते हुए बच्चों को बताया कि विद्यार्थी जीवन में आपका आदर्श आपके शिक्षक, समाज सेवी तथा अच्छे काम करने वाले व्यक्ति होने चाहिए। मुकेश गुर्जर व मोहन सैनी ने बच्चों को फोन का कम से कम प्रयोग करने के निर्देश दिए तथा फोन का प्रयोग पढ़ाई के कार्यों में करने की बात पर जोर दिया। इस कार्यक्रम के दौरान ठेकेदार पंकज शर्मा, मांगीलाल, पप्पू राम, धर्मेंद्र सिंह, मानसिंह तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। कार्यक्रम में मौजूद सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भी नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया गया।

दुष्कर्म का फरार आरोपी गिरफ्तार

मरुधर विशेष

कोटपूतली। निकटवर्ती सरूण्ड थाना पुलिस ने दुष्कर्म के एक मामले में फरार चल रहे एक आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हांसिल की है। एसएचओ बाबूलाल मीणा ने जानकारी देते हुये बताया कि इस सम्बंध में पीड़िता ने मामला दर्ज करवाया था कि आरोपी धर्मपाल पुत्र श्रीराम सैनी विगत दो वर्षो से मेरे साथ जबरन गलत काम कर रहा है। विरोध करने पर बदनाम करने की धमकी देता है। विगत 19 फरवरी 2025 को आरोपी धर्मपाल पीड़िता के घर पर आया एवं गलत काम करने का प्रयास किया तो उसके विरोध करने पर मारपीट की। पीड़िता के हो हल्ला करने पर आरोपी उसके घर से भाग गया। इसकी सूचना पुलिस को देने पर सम्बंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज करते हुये घटना स्थल का निरीक्षण कर एफएसएल एवं मोबाईल टीम बुलाकर साक्ष्य एकत्रित किये गये। साथ ही पीड़िता एवं गवाहों के बयान लेते हुये पीड़िता के बयान न्यायालय में भी रिकॉर्ड करवाये गये।

"बापुजी अद्वितीय युग पुरुष है,उनके जन्मदिन को विश्व सेवादिवस के रुप मे मनाना चाहिए" --नितेश बैरागी बीजेपी नेता

मरुधर विशेष

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा कुशलगढ़: नगरमे संत श्री आसाराम बापुजी के 89 वां अवतरण दिवस पर बैंड-बाजा के साथ भक्तिभाव से शोभायात्रा निकाले गए। पूर्णाहुति मे माल आश्रम का जनसमूह को सम्बोधित करते हुए नितेश बैरागी ने उक्त विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम मे रमण टेलर,माधव कटारा, उरमल ढिंडोर, लालू रावत, नीलेश निनामा,रूपेश कटारा, होमजी रावत,रमेश पारगी,विश्वास निगम, प्रकाश, अपूर्व विश्वास,कौसीक मंडल, धनसिंग कटारा, अजित बोस रायचंद मोइड़ा, बादर,कालु महाराज, भगत, आदि उपस्थित रहे।

पी.एम.श्री. विद्यालय बावल के प्रांगण में अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण का आयोजन

मरुधर विशेष सुनीता सैनी

बावल दिनांक पी.एम. श्री. राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में प्राचार्य प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में अग्निशमन सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।उपरोक्त प्रशिक्षण में उपमंडल फायर सेफ्टी अधिकारी श्री धर्मपाल सिंह व श्री रमन कुमार मिश्रा ने बतौर प्रशिक्षक विद्यार्थियों व समस्त विद्यालय स्टाफ को अग्नि सुरक्षा के विषय पर विस्तारपूर्वक बताया और कैसे हादसे क्रो रोकने व् बचाव संबंधी जानकारी दी फायर अधिकारियो नें कहा थोड़ी सी जागरूकता बड़े हादसे क्रो रोक सकती हैं युवाओं क्रो इसकी जानकारी होनी चाहिए इसके साथ ही उन्होंने अग्निशमन से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी भी सांझा की। अग्निशमन अधिकारी रमन कुमार मिश्रा ने अग्निशमन से सम्बंधित अपने अनुभव की जानकारी दी। उन्होंने अग्निशमन क्षेत्र में विद्यार्थियों को रोजगार संबंधी जानकारी भी बताई।इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।प्रशिक्षण के अंत में दोनों अग्निशमन अधिकारियों का संस्कृत प्रवक्ता श्री मोतीराम जी ने आभार व्यक्त किया।

श्री शिव मंदिर का मनाया स्थापना दिवस

मरुधर विशेष

अलवर।एन ई बी हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी में स्थित शिव मंदिर के स्थापना दिवस मनाया गया।
प्रातः 7:15 बजे शिव मंदिर कमेटी के अध्यक्ष नरेश गोयल द्वारा हवन आहुति देकर कार्यक्रम की शुरुआत की गई।
हवन में कॉलोनी के निवासियों द्वारा अपने जीवनसाथी के साथ आहुति दी गई और देश में सुख शांति की कामना की गई ।तत्व पश्चात 11:15 बजे से प्रसादी वितरण का कार्यक्रम किया गया। शाम को 7:15 बजे महा आरती का कार्यक्रम भी हुआ
इस आयोजन में अध्यक्ष नरेश गोयल पूर्व अध्यक्ष महेश रावत संरक्षक गणेश अग्रवाल राम गुप्ता राजेश गुप्ता मनीष खंडेलवाल दिलीप खंडेलवाल शंभू दयाल खंडेलवाल अमित सोनी जीडी अग्रवाल ए एन मिश्रा पवन साहू कल्याण खाती बालकिशन आहूजा दीपेश गोयल और भी अन्य सेवादारों ने भागीदारी प्रदान की।

राउमावि नाथूसर स्कूल में स्टॉफ द्वारा चलाया गया 'कदम से कलम की ओर' तथा बेजुबानों की जान - परिंडा अभियान

मरुधर विशेष

बानसूर सुरेश कुमार सैनी बानसूर विधानसभा क्षेत्र के दूरस्थ एवम सरिस्का राष्ट्रीय अभ्यारण्य क्षेत्र में अवस्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नाथूसर बानसूर कोटपूतली बहरोड़ के समस्त स्टॉफ की पहल पर विद्यालय के बालकों को शिक्षा की ओर उन्मुख रहने के उद्देश्य से चरण पादुका, और शिक्षण सामग्री सभी बालकों को भेंट की गई। दूसरा अभियान बेजुबानों की जान - परिंडा अभियान का भी शुभारम्भ किया गया। स्टॉफ के सहयोग से विद्यालय और आसपास के क्षेत्रों में 101 परिंडे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। मानवीय और सामाजिक सरोकारों के कार्य करने से सबालकों के चेहरे खिल उठे। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यापक सुरेश वर्मा, पृथ्वी सिंह जाट और सुखपाल गुर्जर ने बालकों को पर्यावरण संरक्षण की जानकारी प्रदान की। विद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य हितेश सैनी ने दोनों अभियानों के संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए इनकी सार्थकता की बात कही। इस कार्यक्रम के अवसर पर हितेश सैनी, नगेन्द्र कुमार, पृथ्वी सिंह जाट,ओमप्रकाश यादव,सुरेश वर्मा,सुखपाल गुर्जर, धर्मवीर, काशीराम, विजयलक्ष्मी तथा बालक उपस्थित रहे।

मरुधरहिंद 24 न्यूज़ प्राइवेट लिमिटेड के लिए महारानी प्रिन्टर्स 17 वैष्णोदेवी नगर कालवाड़ रोड़ जयपुर से मुद्रित,। मो. 9653906665, , (राजस्थान संपादक विशाल यादव 8875020583) (राजस्थान सहसंपादक सुनील कुमार 98878 77947) 7014373732